॥ संतबानी ॥



संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रुप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हम ने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर-सक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत .फुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से .फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् "संतबानी संग्रह" भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी वैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १६१६ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिन प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई हैं। उनके नाम और दाम सूची से, जो कि इस पुस्तक के अंत में छपी है, देखिये। अभी हाल में कबीर बीजक और अनुराग सागर भी छापी गई हैं जिसका दाम क्रमशः ॥।) और १) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

अप्रैल सं० १६२१ ई०

इलाहाबाद

सूचीपत्र

निवेदन

यह थोड़े से चुने हुए शब्द और साखियाँ दरिया साहेब बिहार वाले की जो यहाँ छापी जाती हैं बाबू धीरजदासजी सेक्रिटरी संतमत सोसैटी जोतरामराय ज़िला पुरनिया की कृपा से मिली हैं जिस के लिये उन को अनेक धन्यबाद देता हूं। परन्तु लिपि कैथी अक्षर में लिखी जगह जगह से अशुद्ध थी जिसे अनुमान एक बरस तक इस आसरे में डाल रक्खा गया कि दूसरी लिपि मिल जाय ते। उस से या किसी समझदार दरिया पंथी के सम्मति से शुद्ध करूँ परन्तु जब मालूम हुआ कि धरकंधा के बड़े महंतजी के दबाव बस उनके मत-वाले अपने इष्ट की बानी की त्रुटियाँ ठीक करने को भी पाप समझते हैं ते। लाचार होकर उसी लिपि की बाबू धीरजदासजी की सहायता से जहाँ तक हे। सका दुरुस्ती की गई और कई पद जो समझ में न आये छोड़ दिये गये। ऐसी दशा में हम आशा करते हैं कि प्रेमीजन हमारी भूलों को क्षमा की दृष्टि से देखेंगे।

दरिया साहेब का जीवन-चरित्र उनके प्रसिद्ध ग्रंथ "दरिया सागर" के साथ छापा जा चुका है इस लिये उस के यहाँ फिर छापने की ज़रूरत नहीं है।

अप्रैल, सन् १९१३

अभ्यम,

एडिटर, संतबानी पुस्तक-माला।

दरिया साहेब (बिहार वाले)

के

चुने हुए शब्द

॥ वन्दना ॥

परथम बन्दौं सत चरन, सीस साहेब को नाया ।
यह लीला अगम अपार, भेद बिरला केहु पाया ॥
अगम पुरुष सतवर्ग हैं, सोई मिले हम आय ।
हंसन के सुख कारने, हद्द दियो हद पाय ॥
दया बहु किन्हें जी ।
साहेब तुम गति अगम अपार दया बहु किन्हें जी ॥ १ ॥
झलकत पदुम बहुत उजियारा, बदन छबि सुन्दर रेखा ।
अविगति जोति अधर परकासित, ज्ञान अगम गम पेखा ॥
बिरले जन कोइ चिन्हि के, सत्य चरन सिर नाय ।
रहे प्रेम लौलाय के, नाम सजीवन पाय ॥
दया बहु किन्हें जी ।
साहेब तुम गति अगम अपार दया बहु किन्हे जी ॥ २ ॥
यह जिन्दा रूप अजरि अमरि, निर्मल जोति अपान ।
कहे सर्बज्ञ अरूप सभन तें, सुनो स्रवन दै ज्ञान ॥

बिगसित कँवल सीतल ह्वै आये, सुनहु बचन निर्शान।
हंसन बन्दि छुड़ाय के, जम के मरदे मान ॥
दया बहु किन्हें जो।
साहेब तुम गति अगम अपार दया बहु किन्हे जो ॥ ३ ॥
काल रार* यह चोर, जीव जँहड़ावही।
करे सुरति लौ लाय, ताहि बिलमावही ॥
करे बिबेक बिचारि के, निर्मल धारे ध्यान।
फुल्लित कँवल गगन झरि लावहिं, झलकत सेत निसान॥
दया बहु कीन्हें जो।
साहेब तुम गति अगम अपार दया बहु किन्हें जो॥ ४ ॥
जो बूझै यह भेद है, सोई सन्त सुजान।
भये निर्मल परिमल, बास सुबास समान।
पारस पाय जन ऊधरे, निर्मल भजे सो ज्ञान।
जाय छप लोक रहितां घर पाये जहँ सब हंस सुजान
दया बहु किन्हें जो।
साहेब तुम गति अगम अपार दया बहु किन्हें जो ॥ ५
जो करे परख लौ लाय, ताहि बिलमावहीं ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस, अंत नहिं पावहीं ॥
धरि धरि ध्यान समाधि करि, सपनेहुं सो नहिं पाये।
दीन-दयाल कृपाल दया-निधि, हंसन लये बुलाये ॥
दया बहु किन्हें जो।
साहिब तुम गति अगम अपार दया बहु किन्हें जो

---

* झगड़ालू, फ़सादी † मौत।

करहु भक्ति वे भर्म, कर्म बिसरावहु भाई।
यह होय ब्रह्म भरिपूरि, तो नाम अमल पद पाई॥
अमृत पोषन पाय के भक्ति करे लौ लाय।
धन्य भाग वह जीव के, साहेब लीन्ह छोड़ाय
दया बहु किन्हें जी।
साहेब तुम गति अगम अपार दया बहु किन्हें जी॥ ७॥
कह दरिया सुन, सत्य सब्द यह बानो।
कहाँ छिपे यह मूल, अगम सहिदानी॥
सत्य सुकृत दिल लाइ के, गहिरत जेहि ले ज्ञान।
जो जन के प्रतिपाल हैं, जम से राखि अमान॥
दया बहु किन्हें जी।
साहेब तुम गति अगम अपार, दया बहु कीन्हें जी॥ ८॥

॥ विनती॥

(१)

अबरी* के बार बकसु मोरे साहेब।
तुम लायक सब जोग हे॥ १॥
गून बकसिहौ सब भ्रम नसिहौ।
राखिहौ आपन पास हे॥ २॥
अछै बिरिछि तारि लै बैठैहौ।
तहवाँ धूप न छाँह हे॥ ३॥
चाँद न सुरज दिवस नहिं तहवाँ।
नहिं निसु होत बिहान हे॥ ४॥
अमृत फल मुख चाखन दैहौ।
सेज सुगन्ध सुहाय हे॥ ५॥

---

* निर्बल।

जुग जुग अचल अमर पद दैहौ ।
इतना अरज हमार हे ॥ ६ ॥
भौसागर दुख दारुन मिटि हैं ।
छुटि जैहैं कुल परिवार हे ॥ ७ ॥
कह दरिया यह मंगल मूल ।
अनूप फुलैला जहाँ फूल हे ॥ ८ ॥

(२)

अबरी के बार बकसु मोरे साहेब ।
जनम जनम के चेरि हे ॥ १ ॥
चरन कँवल मैं हृदय लगाइब ।
कपट कागज सब फाड़ि हे ॥ २ ॥
मैं अबला किछुओ नहिं जानौं ।
परपंचन के साथ हे ॥ ३ ॥
पिया मिलन बेरी इन्ह मोरा* रोकल ।
सब जिव भयल अनाथ हैं ॥ ४ ॥
जब दिल में हम निहचे जानल ।
सूझि परल जम फन्द हे ॥ ५ ॥
खूलल दृष्टि दिया मनि नेसलो† ।
मानहु सरद के चन्द हे ॥ ६ ॥
कह दरिया दरसन सुख उपजल
दुख सुख दूरि बहाय हे ॥ ७ ॥

---

* मुझ को । † यदि यह शब्द "निकसल" का अपभ्रंश है तो उस का अर्थ "उदय होना" होगा, और जो "लेसल" है तो "बालना" या "जलाना" अर्थ होगा ।

॥ संझा आरती ॥

(१)

संझा आरति समरथ की है।
सिर पर छत्र सुगंध सही है ॥ १ ॥
नहिँ तहँ चोवा चन्दन पानी।
अविगति जोति है अमृत बानी ॥ २ ॥
नहिँ तहँ तिलक जनेऊ माला।
पूरन ब्रह्म अखंडित काला ॥ ३ ॥
नहिँ तहँ जाति बरन कुल कोई।
बरसत अमृत चाखहिँ सोई ॥ ४ ॥
अजर अमर घर लेहिँ निवासा।
नहिँ तहँ काल कुबुधि के त्रासा ॥ ५ ॥
आवन गवन गरभ नहिँ बासा।
कह दरिया सोइ सतगुरु दासा ॥ ६ ॥

(२)

आरति समरथ करौँ तुम्हारी।
दीन-दयाल भक्त-हितकारी ॥ १ ॥
ज्ञान दिपक लै मन्दिर बारौँ।
तन मन धन लै आगे वारौँ ॥ २ ॥
चित चन्दन लै रगड़ि बनावौँ।
ब्रह्म पुहुप लै आनि चढ़ावौँ ॥ ३ ॥
अनहद धुनि गहि घंट बजावौँ।
शब्द सिँघासन चरन मनावौँ ॥ ४ ॥

आपहिँ छत्र चँवर सिर छाजे।
कह दरिया तहँ संत बिराजे ॥ ५ ॥

(३)

सत्य पुरुष किये दाया मोहीं।
चरन कँवल चित रहौं समोई ॥ १ ॥
सुख-सागर दुख मेटनहारा।
दीन-दयाल उतारहिँ पारा ॥ २ ॥
जहँ जहँ गाढ़ संतन कहँ डारा।
समरथ बन्दि छोड़ावनहारा ॥ ३ ॥
जा के डर काँपै धर्म धीरा।
बुड़त उबारेउ दास कबीरा ॥ ४ ॥
दया-सिन्धु गुन गहिर गँभीरा।
कह दरिया मेटै दुख पीरा ॥ ५ ॥

(४)

सुमिरहु सत पद प्रान-अधारा।
सत्त सब्द लै उतरहु पारा ॥ १ ॥
गुरु के वचन पावल जब बीरा।
अचल अमर निहचै घर धीरा ॥ २ ॥
हंसा जाय मिले करतारा।
बहुरि न आवै एहि संसारा ॥ ३ ॥
तीनि लोक से न्यारे डेरा।
पुरुष पुरान जहँ हंस घनेरा ॥ ४ ॥
गुरु के बचन सिष्य जो धरई।
जाय छप* लोक नरक नहिँ परई ॥ ५ ॥

* गुप्त अर्थात छिपा लोक।

कह दरिया जब बीरा पावै ।
जाय सतलोक बहुरि नहिं आवै ॥ ६ ॥

(५)

मैं कुलवन्ती खसम पियारी ।
आँचल तूँ लै दीपक बारी ॥ १ ॥
गंध सुगंध थार भरि लीन्हा ।
चन्दन चर्चित आरति कीन्हा ॥ २ ॥
फूलन सेज सुगंध बिछायौं ।
आपन पिया पलँग पौढ़ायोँ ॥ ३ ॥
सेवत चरन रैनि गइ बीती ।
प्रेम प्रीति तुमहीं सौं रीती ॥ ४ ॥
कह दरिया ऐसा चित लागा ।
भई सुलछनि* प्रेम अनुरागा ॥ ५ ॥

॥ झूलना ॥

(१)

घट घट कपाट खोलिये रे ।
अखंड ब्रह्म को देखना है ॥ १ ॥
देवल दरस महल मूरति ।
पत्थर का पूजना पेखना है ॥ २ ॥
आतम पूजा नहिं देव दूजा ।
सो जाति अनेक लेखना है ॥ ३ ॥
कह दरिया दिल देखि बिचारि के ।
सत नाम भजो सत देखना है ॥ ४ ॥

* अच्छे लक्षण वाली ।

प्रेम धगा* यह टूटता नाँ ।
गरा† टूटि कंठी फिर बाँधना क्या ॥ १ ॥
यह तत्त लिछक सत नाम छापा करु ।
और बिबिधि है देखना क्या ॥ २ ॥
ज्ञान का दंड न डगमगै कर ।
दंड लिये काहू मारना क्या ॥ ३ ॥
यह झूलना दरिया साहेब कहा ।
सत नाम सही बहु पेखना क्या ॥ ४ ॥

(३)

दुइ सुर चाले एक भाव से ।
नाभि में उलटि के आवता है ॥ १ ॥
बिच इंगला पिंगला गले तीन नाड़ी,
सुखमनि से भेद बतावता है ॥ २ ॥
उमँग करो अरु पूरो भरो ।
गंधर्ब लिये झरि लावता है ॥ ३ ॥
यह झूलना दरिया साहेब कहा ।
कोइ जोगी जुगुत से पावता है ॥ ४ ॥

(४)

झक झक लगा झक झक लगा ।
यह झरि झरोखे झाँकिया रे ॥ १ ॥
झरि झरि परा झरि झरि परा ।
यह फूल गुलाब के आँखिया रे ॥ २ ॥

---

* धागा, डोरा । † गला ।

पिय प्रेम चखो पिय प्रेम चखो ।
लज्जत* भला दिल राखिया रे ॥ ३ ॥
दरसे हियरे दरगाह भला ।
दरिया कहैं सत साखिया रे ॥ ४ ॥

(५)

नाफ[†] तदबीर है दिल के बीच में ।
कुदरत मसजिद बनाइ दीता ॥ १ ॥
दोय बिच लाल अजब लागे ।
तहँ जोति का नूर परगट कीता ॥ २ ॥
यह चित्त के चोभ में बाँग[‡] देवे ।
यह नाम नीसान नजर लीता ॥ ३ ॥
कहैं दरिया दाना दिल के बीच ।
अलफ़ अलह को याद कीता ॥ ४ ॥

॥ रेख़्ता अष्ट पदी ॥

(१)

काया मैं जिव औ सिव संग सक्ति है ।
काया में काम औ क्रोध छावै ॥ १ ॥
काया की खानि अमोल निर्बान है ।
काया नवो नाडिका[§] बाट आवै ॥ २ ॥
काया पिंड प्रान तें भानु चन्दा उगै ।
काया की सुरति यह साफ धावै ॥ ३ ॥
काया में त्रिबेनी की लहरि तरंग है ।
काया में अमी सुख धार आवै ॥ ४ ॥

---

* स्वाद । † नाभी, ढोंढ़ी । ‡ आवाज़, शब्द । § नाड़ी ।

काया में मूल यह फूल परघट है ।
काया छव चक्र दिब* दृष्टि लावै ॥ ५ ॥
काया के अग्र यह गगन गढ़ झाँकि है ।
काया कोट पैठि यह घाट आवै ॥ ६ ॥
सोई खिध सोई साध संत जुग जुग जिवै ।
पिवै पहिचानि सत सब्द पावै ॥ ७ ॥
कहैं दरिया सत वर्ग सत सोई है ।
मरै ना जिवै ना गर्भ आवै ॥ ८ ॥

(२)

एक वह एक है टेक कोई गहै ।
समझि के पाँव दे राह बाँकी ॥ १ ॥
सत्त का टोप सिर सब्द का साँगि† ले ।
ज्ञान का तुरिया‡ तेज हाँकी ॥ २ ॥
काम औ क्रोध की फौज सब सोधि के ।
बैठु मैदान में राखु ताकी ॥ ३ ॥
सबल नीसान यह बान§ आगे खड़ा ।
जगत में सोर नहिं रही बाकी ॥ ४ ॥
संत सीपाह दिन रैन ठाढ़ा रहै ।
कायागढ़ कोट में देत झाँकी ॥ ५ ॥
मन मस्त गयन्द जंजीर में दुहि रहत ।
रहै साबीन‖ सब बात वा की ॥ ६ ॥
जमीं और असमान के बीच में ।
गगन में मगन धुनि किरति जा की ॥ ७ ॥

---

* दिव्य । † भाला । ‡ घोड़ा । § साज, ठाठ । ‖ ताबे ।

कहैं दरिया दिल साँचि सोभै कोई।
सिंघ की ठवनि* करु रहनि एकी ॥ ८ ॥

(३)

ज्ञान का घोड़ला सुन्न में दौड़िया।
सुन्न में सुरति है सब्द सारा ॥ १ ॥
काया तो कर्म है भर्म लागा रहै।
काया के अग्र दिब दृष्टि वारा ॥ २ ॥
नूर जहूर खुसबोय† खासा बना।
बास सुबास में भँवर हारा ॥ ३ ॥
मुरली मगन महबूब आपै बना।
भिँगुर भनकार तहँ बजत तूरा ॥ ४ ॥
गगन गरजत अहै बुन्द आखंडिता।
पंडिता बेद नहिँ अंक न्यारा ॥ ५ ॥
हद्द बेहद्द यह अन्त अथाह है।
कोई जन जुगति से जाय पारा ॥ ६ ॥
जौहरी जानिया जाहिर जा के कहो।
हीरा मनि पास है जोति सारा ॥ ७ ॥
कहैं दरिया कोइ वली मस्तान है।
सब्द के साधि ले संत प्यारा ॥ ८ ॥

(४)

संत की चाल तूँ समभ बाँकी बड़ी।
सुरति कमान कसि तीर मारा ॥ १ ॥
पाँच के मेटि पच्चीस के दल मलो।
छवो के छेदि पिउ सब्द सारा ॥ २ ॥

---

* चाल। † सुगंधि।

साधि ले मेरुदँड बैठु ब्रह्मंड खँड ।
पवन परिचेलि* ले काम जारा ॥ ३ ॥
काल जंजाल का मनी कूताइ ले ।
जोग गहि जुगुत तुम समझु यारा ॥ ४ ॥
उलटि पवन तुम मगन करु गगन में ।
साधि ले त्रिकुटि दिब्ब दृष्टि वारा ॥ ५ ॥
जहँ होत झनकार सत सब्द उँजियार ।
तहँ छूटि गौ तिमिर उदोत सारा ॥ ६ ॥
तहँ रोग ना सोग निर्दोष निर्वान है ।
सर्बज्ञ सब्ब माहिँ तुम देखु यारा ॥ ७ ॥
कहैं दरिया दिल पैठु दरियाव में
पावो तुम लाल अमोल प्यारा ॥ ८ ॥

(५)

नाम निर्वान तेँ कर्म किल्बिष छुटै ।
खुलै कपाट मद मोह टारा ॥१॥
काल का फाँस जो कटि कत्तल† किया ।
ज्ञान गुरु खड़ग ले काटि यारा ॥ २ ॥
अनुराग वैराग हिय छेद विरह भेद ।
सत वर्ग सत नाम तुम समझु प्यारा ॥ ३ ॥
होइ आवरन सब काम करिवो छुटै ।
खुलै मुल दृष्टि पर अगम डेरा ॥ ४ ॥
काया के अग्र जहँ अगम झलकत रहै ।
झरत झरि अगम सब फहम तेरा ॥ ५ ॥

* जगाना । † मार डाला ।

षित्त षतुरंग जहँ जोति जगमग बरै।
 झारि चकमाक* षित समझि हेरा ॥ ६ ॥
तहँ षोड़स प्रगास है उदित उँजियार भौ।
 ब्रह्म भरिपूरि सुख बैन टेरा ॥ ७ ॥
कहैं दरिया तुम झारि परचारि ले।
 होहु हुसियार नहिँ काल घेरा ॥ ८ ॥

(६)

पेड़ को पकड़ तब डार पालो मिलै।
 डार गहि पकड़ नहिँ पेड़ यारा† ॥ १ ॥
देख दिब दृष्टि असमान मैं चन्द्र है।
 चन्द्र की जोति अनगिनित तारा ॥ २ ॥
आदि औ अंत सब मध्य है मूल मैं।
 मूल मैं फूल बौ केति डारा ॥ ३ ॥
नाम निर्गुन निर्लेप निर्मल बरै।
 एक से अनँत सब जगत सारा ॥ ४ ॥
पढ़ि बेद कितेब बिस्तार बक्ता कथै।
 हारि बेचून वह नूर न्यारा ॥ ५ ॥
निर्पेष निर्बान निःकर्म निःभर्म वह।
 एक सर्वज्ञ सत नाम प्यारा ॥ ६ ॥
तजु मान मनी करु काम को काबु‡ यह।
 खोजु सतगुरू भरपूर सूरा ॥ ७ ॥

* चकमक पत्थर जिस से आग झाड़ते हैं। † पेड़ के पकड़ने से डाल पत्ती तो मिल जायगी पर डाल के पकड़ने से पेड़ हाथ नहीं आवेगा। ‡ बस में।

असमान के बुन्द गरकाब* हुआ ।
  दरियाव की लहरि कहि बहुरि मूरा† ॥ ८ ॥

(७)

दंड प्रनाम कहु कौन का को करै ।
  बूझु उलटि भेद आप न्यारा ॥ १ ॥
नेम आचार षट कर्म पूजा करै ।
  लाइ पाखंड सब जगत जारा ॥ २ ॥
घास में नवस बक ध्यान धारे रहै ।
  कपट कपाट सुख अंतर आना ॥ ३ ॥
कठिन कठोर बिकराल चंचल रहै ।
  विषै रस लीन कहु कौन ज्ञाना ॥ ४ ॥
भोग भुगते परै सोग सागर भरै ।
  सोग भोग रहत बाहि जात ज्ञाना ॥ ५ ॥
दृष्टि देखे बिना मुक्ति पावै नहीं ।
  कठिन की खानि दुख जानि ठाना ॥ ६ ॥
अच्छर निःअच्छर है देह बिदेह में ।
  जोति की झलक में दृष्टि आना ॥ ७ ॥
चन्द औ सूर दोउ जोति परघट धरै ।
  दिल दरियाव यहु गहिर ज्ञाना ॥ ८ ॥

(८)

आपना ध्यान तुम आप करता नहीं ।
  आपने आप में आप देखा ॥ १ ॥
आपही गगन में मगन है आप ही ।
  आपही तिरकुटी भँवर पेखा ॥ २ ॥

---

* पानी में डूब गया । † मुड़ा ।

आपही तत्व निःतत्व है आपही ।
आपही सुन्न में सब्द देखा ॥ ३ ॥
आपही घटा घनघोर है आपही ।
आपही बुन्द है सिन्धु लेखा ॥ ४ ॥
आपही छटा चमकि रहे आपही ।
आपही मोतिया सीप पेखा ॥ ५ ॥
आपही चन्द है सूर है आपही ।
आपही तारागन अनँत लेखा ॥ ६ ॥
आपही मनी मनियार* है आपही ।
आपही छत्र सिर आप पेखा ॥ ७ ॥
कहैं दरिया जिव दरस आपै दिखा ।
परस है प्रेम सत ज्ञान रेखा ॥ ८ ॥

(६)

निरखु सत नाम निज नाम सुपंथ है ।
दया के तख्त पर बैठु भाई ॥ १ ॥
छोड़ि दो कह तुम अकह में गमि करो ॥
सुन्न में सुरति गहि नाम लाई ॥ २ ॥
देखि के तत्व निःतत्व निर्बान है ।
रहो ठहराय सत सब्द पाई ॥ ३ ॥
ब्रह्म बीबेक बिचारि चित चेति के ।
होइ अबोल तजु झूठ झाँई ॥ ४ ॥
काम की फौज से बान तैं दलमलो ।
रहो निर्पंच नहिं काल खाई ॥ ५ ॥

---

* मनीवाला साँप ।

ब्रह्म का तेज यह भेद बाँका बड़ा ।
गहिर गरकाब गहि अगम गाई ॥ ६
सुरति औ निरति सब थीर थाका हुआ ।
स्वास सुबास रस रहस छाई ॥ ७ ॥
कहैं दरिया सत बर्ग सब माहिं है ।
संत जन जौहरी भेद पाई ॥ ८ ॥

(१०)

घना मोती झरै जोति जगमग बरै ।
घटा घन घेरि चहुँ ओर फेरा ॥ १
बुन्द अखंड सुर चलै ब्रह्मंड के ।
काम की फौज सब घेरि टेरा ॥ २ ॥
तिरबेनी मध्य तहँ सुरति सनमुख कियो ।
सुखमना घाट को दृष्टि हेरा ॥ ३ ॥
पलक में झलक चहुँ मँदिर छबि छाइया ।
ब्रह्म पुनीत नहिं बहुरि फेरा ॥ ४ ॥
भेद वा का बड़ा काल संका नहीं ।
ज्ञान घट खुला सब कर्म जेरा ॥ ५ ॥
ध्यान लागा रहै गगन घन गरजिया ।
कुमति कुबुद्धि हूँ रहै चेरा ॥ ६ ॥
बैन बिचारि यह लगन लागी रहै ।
मगन सब दिन कियो गगन डेरा ॥
संत सुजान जिन सब्द बोचारिया ।
कहैं दरियाव सो सदा मेरा ॥ ८ ॥

(११)

अगम गुरु-ज्ञान से ब्रह्म पहिचानिया ।
बिना पहिचान क्या कथै ज्ञानी ॥ १ ॥
बिना पहिचान अनजान कहँ जाइहौ ।
बिना ठहराव कहँ ठौर ठानी ॥ २ ॥
बिना दिब दृष्टि यह जीव कहँ जाइहै ।
उर्द्ध धरि ध्यान मुख विकल बानी ॥ ३ ॥
अर्द्ध अँधियार जहँ चोर चारिउ बसैं ।
बिना सत सब्द जिव होत हानी ॥ ४ ॥
बिना मगु देखि यह भेष भरमत फिरै ।
जोग नहिं जुगुति रस रोग आनी ॥ ५ ॥
खाली सब खलक है पलक मूँदे रहै ।
खुले दिब दृष्टि सोइ सिद्ध ज्ञानी ॥ ६ ॥
सोइ साधु भरपूर है सूर सनमुख सही ।
आप में आप जिन उलटि आनी ॥ ७ ॥
कहैं दरियाव सत सब्द बिनु पार नहिं ।
वार भटकत रहै मूढ़ प्रानी ॥ ८ ॥

(१२)

पुरुष अडोल वै सत्त समरथ सही ।
कुर्म* के कीन्ह यह जगत जानी ॥ १ ॥
कुर्म तें चाँद यह सूर परघट भये ।
कुर्म तें कीन्ह यह पवन पानी ॥ २ ॥
कुर्म तें सेस यह सात सागर भये ।
कुर्म तें अगिनि धाराह खानी ॥ ३ ॥

---

* कछुआ, कच्छप औतार ।

कुर्म तें भिन्न इक जगत-जननी* किया।
तांहि उतपन्न भौ तीन ज्ञानी† ॥ ४ ॥
तेज‡ अब छेद जिन उदधि मथन किया।
अमृत औ बिष सब आनि सानी ॥ ५ ॥
ह्रिया मनमत्त यह काम तें बसि किया।
कुर्म तें सृष्टि भौ ब्रह्म ज्ञानी ॥ ६ ॥
आदि औ अंत यह मध्य मंडल रचा।
ताहि साहेब को तुल्ल जानी ॥ ७ ॥
कर्ता उठाय के धुन्ध धोखा धरे।
कहैं दरिया सुनु मूढ़ प्रानी ॥ ८ ॥

(१३)

आपने जोग से जुगुति के जानिले।
संत की जुगुति क्या जगत जाने ॥ १ ॥
संत का बास आम खास जहँ तखत है।
देखि दिब दृष्टि तहँ सुरति आने ॥ २ ॥
आँखि का मूँदना बक§ का काम है।
पवन का साधना भाँड़ जाने ॥ ३ ॥
छोड़ि के असल यह नकल परघट करै।
सोई मरदूद नहिं कहा माने ॥ ४ ॥
जम के हाथ जिव बेंचि खरची करै।
नाहिं गुरु गम्म सतगुरु जाने ॥ ५ ॥
कहै बेचून बेगून बाहैं सेरा।
सोई जिव बाँधि जिबरील|| ताने ॥ ६ ॥

---

* माया। † ब्रह्मा, विष्णु, महेश। ‡ तजो। § बकुला। || मौत का फ़रिश्ता।

बेद कितेब से फहम आगे करै ।
जोग बैराग बिबेक आनै ॥ ७ ॥
कहैं दरिया सत सब्द परचारि कै ।
सुमिरि सतनाम मैदान ठानै ॥ ८ ॥

॥ झूलना अष्ट पदी ॥

(१)

कहिं जोगिया जुगुति से जोग करै ।
कहिँ लाये कपाट गगन तारी ॥ १ ॥
कहिं ध्यान प्रगट कै ज्ञान गावै ।
कहिँ ताल मृदंग लै झाल झारी ॥ २ ॥
कहिँ झूलना झूले रेसम डोरी ।
कहिँ पंच अगिनि जल बाँधि बोरी ॥ ३ ॥
कहीं कर माला तिलक देवै ।
कहिँ तीरथ भरम में आपु हारी ॥ ४ ॥
कहिँ भूख मारे कहिँ प्यास टारे ।
कहिँ आपने आप से तन जारी ॥ ५ ॥
बहु रंग का पेखना है रे ।
यह जानि जहान में जीव हारी ॥ ६ ॥
सहज सुरति है मूल में रे ।
दिब दृष्टि नहीं दिब दृष्टि टारी ॥ ७ ॥
कहैं दरिया जनि पचि मरो ।
सब्द के साँगि* ले जक्त झारो ॥ ८ ॥

---

*माला ।

(२)

काया परिचै नहीं पवन के साध करि ।
पवन के साधि जम बाँधि मारै ॥ १ ॥
इँगला पिँगला नौ यह नाटिका ।
भूख औ प्यास तजि तनै जारै ॥ २ ॥
भया तन छीन बलहीन जोग जुगुति बिनु ।
आपने मूढ़ कहु काहि तारै ॥ ३ ॥
साँपिनी डाइनी मूसे दिन रैन यह ।
बिना तप तेज नहिं समुझि पारै ॥ ४ ॥
पिंड औ प्रान कछु काम के हैं नहीं ।
झूठ साखी कथै कुफुर बारै ॥ ५ ॥
चाल बेचाल चलै सील संतोष नहिं ।
अवर सों अवर कहि अवर टारै ॥ ६ ॥
छोडु परपंच तुम फंद काहे रचे ।
फंद जंजाल का काम सारै ॥ ७ ॥
काया के अग्र यह अगम पहिचानि ले ।
कहैं दरिया सत सब्द धारै ॥ ८ ॥

(३)

घट परघट पर मौन परमान है ।
दिव दृष्टि की आस का दूरि जानी ॥ १ ॥
धुन्ध धोखा धरे भरमि काहे मरे ।
निकट नीसान नहिँ फहम आनी ॥ २ ॥
दीद पर दीद परतच्छ निसान है ।
निरखु निज नाम चढु गगन ज्ञानी ॥ ३ ॥

गगन की डोरि यह सुरति छूटे नहीं।
अजब अचरज सब दरस बानी ॥ ४ ॥
दरस में परस है ज्ञान गंभीर यह।
गहिर गरकाब रस प्रेम सानी ॥ ५ ॥
छव औ आठ का बाट बाँका मिला।
महल मुकाम का भेद जानी ॥ ६ ॥
भेद ब्रह्म ज्ञान तें भरम परबस ढहा।
रहा निज नाम सोइ जानु प्रानी ॥ ७ ॥
कहैं दरिया गढ़ चढ़ा गुरु ज्ञान तें।
नाम नीसान मैदान ठानी ॥ ८ ॥

॥ बसंत ॥

(१)

कहाँ जैये हो उहाँ तिरथ तीर।
जहाँ गंगा जमुना निकट नीर ॥ १ ॥
जहाँ निरमल जल है अमी संग।
झरत सरसुती होत न भंग ॥ २ ॥
मंजन करि सज्जन जो होय।
अघ पातक सब बैठे खोय ॥ ३ ॥
जहाँ लहरि उतँग है सिन्धु समाइ।
उलटि आवे फिर पलटि जाइ ॥ ४ ॥
जहाँ चन्द सूर सब गन हैं साथ।
ज्ञान दिपक जब आउ हाथ ॥ ५ ॥
जहाँ पाँच पचीस सँग मन है भूप।
देवल देखी अजब रूप ॥ ६ ॥

जहाँ भूख प्यास है दया समेत ।
बोइये बीज जो मिले सुखेत ॥ ७ ॥
जहाँ सुरसरि तहँ बसहिं जीव ।
दरद बिना कहु का को पीव ॥ ८ ॥
ता की खबर कहु कैसे जाय ।
धीमर सो जिव धरि के खाय ॥ ९ ॥
सतगुरू कहा सब्द उपदेस ।
अगम निगम सब सुनु सँदेस ॥ १० ॥
सत तरनी* भवसिन्धु पार ।
दरिया दरसन गुन है सार ॥ ११ ॥

(२)

मानु सब्द जो करु बिबेक ।
अगम पुरुष जहँ रूप न रेख ॥ १ ॥
अठदल कँवल सुरति लौ लाय ।
अछपा जपि के मन समुझाय ॥ २ ॥
भँवरगुफा में उलटि जाय ।
जगमग जोति रहे छबि छाय ॥ ३ ॥
बंक नाल गहि खैंचे सूत ।
चमके बिजुली मोती बहुत ॥ ४ ॥
सेत घटा चहुँ ओर घनघोर ।
अजरा जहवाँ होय अँजोर ॥ ५ ॥
अमिय कँवल निज करो बिचार ।
चुवत बुन्द जहँ अमृत धार ॥ ६ ॥

* नाव ।

छव चक्र खोजि करो निवास ।
मूल चक्र जहँ जिव को बास ॥ ७ ॥
काया खोजि जोगी भुलान ।
काया बाहर पद निर्बान ॥ ८ ॥
सतगुरु सब्द जो करे खोज ।
कहँ दरिया सब पूरन जोग ॥ ९ ॥

(३)

सुख सागर जियरा करु अनन्द ।
प्रेम मगन खेलु तजि दुंद ॥ १ ॥
छुटिगो तिमिर उदीत भान ।
सेत मँडल बिच सोह निसान ॥ २ ॥
गगन गरजि झरि होत तरंग ।
सींचत गुलाब सीतल भौ अंग ॥ ३ ॥
बिगसित कुमुदिनि उदित चन्द ।
भूल भँवर तहँ खुली तरंग ॥ ४ ॥
गगन मँडल बिच भयो है बास ।
सींचत चकोर तहँ चुगू सुबास ॥ ५ ॥
अष्टदह कँवल के उपर मूल ।
सहज कँवल जहवाँ रहु फूल ॥ ६ ॥
झरि झरि परत सुरँग रँग फूल ।
प्रेम अगम गम हो समतूल ॥ ७ ॥
भे निर्मल पावो सब्द सार ।
संत सरन गहि होहु पार ॥ ८ ॥

अजर अमर पुर भयो बास ।
कहँ दरिया मेटी जम त्रास ॥ ९ ॥

(४)

खेलहिं बसंत सब संत समाज ।
बिनु किन्नर धुनि बाजन बाज ॥ १
बिनु तुरंग जहँ जोतहिँ रंथ* ।
बिनु पग चलहिँ सो अगम पंथ ॥
बिनु दीपक जहँ बरै जोति ।
बिनु सीपन्ह के मोती होति ॥ ३ ॥
बिनु फूलन जहँ गुथहिँ हार ।
बिनु मुख हाहिँ सो मँगलचार ॥ ४
बिनु सखियन्ह जहँ गावहिँ गीत ।
निर्गुन नाद से करहिँ प्रीत ॥ ५ ॥
बिनु आसा जहँ अधर बास ।
बिनु परिमल जहँ आउ सुबास ॥ ६
बिनु झालरि जहँ सेत निसान ।
बिना घटा† घन झरै अमान ॥ ७ ॥
बिनु बिद्या जहँ भनहिँ बेद ।
है कोइ पंडित करे निषेद ॥ ८ ॥
कहँ दरिया यह अगम ज्ञान ।
समुझि बिचारैं संत सुजान ॥ ९ ॥

(५)

सोइ बसंत खेलहिँ हंस राज ।
जहँ नभ कौतुक सुर समाज ॥ १ ।

---

* रथ । † घटा, बादलों की घेर घार ।

अछै बिरिछ तहाँ द्रुम पात ।
साखा सघन घन लपटि जात ॥ २ ॥
मधुर मनोहर राग रंग ।
अनहद धुनि नहिं ताल संग ॥ ३ ॥
बेलि चमेली बिबिधि फूल ।
सोभा अग्र गुलाब मूल ॥ ४ ॥
भँवर कँवल मैं भाव भोग ।
पदुम पदारथ करिये जोग ॥ ५ ॥
बुन्द अखंडित बरखु नीर ।
गगन गरजि घन बाजु तूर ॥ ६ ॥
चमक छटा चहुँ ओर जोर ।
झींगुर की झनकार सोर ॥ ७ ॥
दिवस दिवाकर रैनि चन्द ।
कला संपूरन होत न मंद ॥ ८ ॥
उरगन* मनि तहँ दृष्टि पेखु ।
आदि अंत मध मूल देखु ॥ ९ ॥
उदित उजागर हंस सार ।
नहिं दुख दारुन भव के पार ॥ १० ॥
मुक्ति महातम सतगुरु मंत ।
दरिया दर्सन मिलिहैं कंत† ॥ ११ ॥

(६)

सुमिरहु निर्गुन अजर नाम, सब बिधि पूजै सुफल काम ॥१॥
निर्गुन नाह सें करहु प्रीति, लेहु कायागढ़ काम जीति ॥२॥

---

* तारा । † पति ।

औनक मूल है सब्द सार, चहुँ ओर दीसै रँग करार ॥३॥
झरस झरी तहँ झमकै नूर, चितचकमक गहि बाज तूर ॥४॥
झलझल पदुम गगन उँजियार, दिव्य दृष्टिगहु मकर तार ॥५॥
द्वादस इंड़ा पिंगला जाय, परिमल बास अग्र सो पाय ॥६॥
बंक कँवल मध हीरा अमान, सेत बरन भौंरा तहँ जांन ॥७॥
खोजहु सतगुरु सत निसान, जुक्ति जानि जिन कथहिं ज्ञान ॥८॥
कहैं दरिया यह अकह मूल, आवा गवन के मिटे सूल ॥९॥

(७)

मैं जानहुँ तुम दीन-दयाल ।
तुम सुमिरे नहिं तपत काल ॥ १ ॥
ज्यौं जननी प्रतिपाले सूत* ।
गर्भ बास जिन दियो अकूत ॥ २ ॥
जठर अगिनि तें लियो है काढ़ि ।
ऐसो वा की ठवर गाढ़ि ॥ ३ ॥
गाढ़े जो जन सुमिरन कीन्ह ।
परघट जग में तेहि गति दीन्ह ॥ ४ ॥
गरबी मारेउ गैब बान ।
संत को राखेउ जीव जान ॥ ५ ॥
जल में कुमुदिनि इन्दु† अकास ।
प्रेम सदा गुरु चरन पास ॥ ६ ॥
जैसे पपिहा जल से नेह ।
बुन्द एक विस्वास तेह ॥ ७ ॥
स्वर्ग पताल मृत मंडल तान ।
तुम ऐसा साहेब मैं अघान ॥ ८ ॥

*पुत्र । †चन्द्रमा ।

जानि आयो तुम चरन पास ।
निज मुख बोलेउ कहेउ दास ॥ ९ ॥
सत पुरुष बचन नहिं होहिं आन ।
बलु पुरब से पच्छिम उगहिं भान ॥ १० ॥
कहैं दरिया तुम हमहिं एक ।
ज्यों हारिल की लकड़ी टेक* ॥ ११ ॥

॥ होली ॥

(१)

होरी सद संत समाज संतन गाइया ॥ टेक ॥
बाजा उमंग झाल झनकारा, अनहद धुन घहराइया ।
झरि झरि परत सुरंग रंग तहँ, कौतुक नभ में छाइया ॥ १ ॥
राग रुबाब अघोर तान तहँ, भिनभिन जंतर लाइया ।
छवो राग छत्तीस रागिनी, गंधब सुर सब गाइया ॥ २ ॥
पाँच पचीस भवन में नाचहिं, भर्म अबीर उड़ाइया ।
कहैं दरिया चित चन्दन चर्चित, सुन्दर सुभग सोहाइया ॥३॥

(२)

होरी खेलत संत, नाम सुगंध बसाइया ॥ टेक ॥
उनमुनि की पिचुकारी केसरि, भरि छिरकत प्रेम सो पाइया ।
बरखेउ सुमन सुगँध चहुँ ओरा, गगन में मगन सोहाइया ॥१॥
त्रिकुटी के तट रास रचो है, सुर सुन सखि सब धाइया ।
अगर गुलाल कुमकुमा केसरि, चोवा चर्चित लाइया ॥२॥
मंदिर मगन मनोरथ मन के, बाजत मुरली छाइया ।
कहैं दरिया कँवल दल फूलेउ, भँवरा बास लोभाइया ॥३॥

---

* हारिल चिड़िया बिना चंगुल में लकड़ी पकड़े ज़मीन पर नहीं उतरती ।

(३)

संतो निरमल ज्ञान बिचारि, होरी खेलिये हो ॥ टेक ॥

कँवल उजारि अनल बिच रोपेउ, प्रेम सुधा रस डारि ।
कंचन डाहु* अगम जल भीतर, सकल भरम सब जारि ॥१॥
कोकिल ध्यान धरे सरिता महँ, जल में दीपक बारि ।
मीन सिखर इस्थिर घर पायेउ, संसै सकल बिसारि ॥२॥
बासर चन्दा रैनि भानु छबि, देखहु दृष्टि उघारि ।
धरती बरषि गगन चढ़ि आनेउ, पर्बत फूटि पनारि ॥ ३ ॥
अर्ध सीप सम्पुट खोलि बैठे, लागि मोतिन की तार† ।
कहैं दरिया एह अगम भेद है, बूझहु संत सम्हारि ॥ ४ ॥

(४)

यह होरी को दाव गाव सुख रंग है ॥ टेक ॥

मन मथुरा है तन बृन्दाबन, पाँच सखी सब संग है ।
अनहद तान पखाउज बाजत, तार कबहुँ नहिं भंग है ॥१॥
राधे राग रुबाब उघर लिये, कान्ह किंगरि मुरचंग है ।
गोपी ज्ञान थार लिये थिरकति, सुचि सुगंध भरि अंग है ॥२॥
जल जमुना है त्रिकुटी के तट, ऊठत लहरि तरंग है ।
कहैं दरिया सो हंस गुन राजित, कोकिल बैन सोहंग है ॥३॥

(५)

हो ललना, कोइ संत बिबेकी रन मँड़े ॥ टेक ॥

ज्ञान घोड़ा चढ़ि चित करु चाबुक, लब लगाम दे जानि ।
सब्द साँगि समसेर जो लीजे, सब चढ़िये मैदान ॥१॥

---

* तपाओ । † लड़ी ।

प्रेम प्रीत के बखतर पहिरो, सुरति के करहु कमान।
एक तीर मारेउ तरकस के, बिचलेउ पाँचो ज्वान ॥२॥
सतगुरु के तहँ अमल फिरतु हैं, जोति के लियो है निसान।
कहैं दरिया कोइ संत हजूरी, जाके रहस है खेत निदान ॥३॥

(६)

होरी खेलिये संतो, चलहु अमरपुर धाम ॥ टेक ॥
काया महल में जोति बिराजै, सोइ सुन्दर सुख धाम।
जोगी जोग करत सब हारेउ, चीन्हि परेउ नहिं ग्राम ॥१॥
पंडित जप तप ध्यान लगावैं, त्रय संझा इक जाम।
पाँच तलबिया संग बसतु हैं, देहिँ चौगुनो दाम ॥ २ ॥
जोग करैं फिरि भोग में ब्यापैं, बड़े बीर हैं काम।
कहै दरिया झरि लागि गुलाब की, काया अग्र निज नाम ॥३॥

(७)

कोइ हंसा चतुर सुजान होरी खेलहीं ॥ टेक ॥
अगर कुमकुमा नाम सुबासित, प्रेम भक्ति निज सार।
सेत बरन सिर छत्र बिराजै, बाजत अनहद तार ॥ १ ॥
परिमल बास प्रेम रँग छिरकै, कामिनि कर लिये छाज।
कोटि कामिनि जाके चवर डोलावहिं, बैठे हंसा राज ॥२॥
एक रूप सब हंस बिराजहिं, बरन कवन बिधि साज।
धनि धनि फाग खेलि यह दरिया, तेजि सकल भ्रम लाज ॥३॥

(८)

जहाँ खेलत राजा मन होरी ॥ टेक ॥
सक्ति रूप सोभा छबि छायेउ, रेसम फुँदना है डोरी।
भाँति भाँति को चित्र रचो है, ता बिच सुन्दरि है गोरी ॥१॥

घेरि पकड़ि के पलँग चढ़ायेउ, सिवसँग सक्ती है जोरी।
कहैं दरिया सुर नर मुनि नाचेउ, बिरला याचेउ रँग बोरी॥२॥

(९)

खेलु खेलु फाग संतन संगे, निज गहि ले रंग करार॥टेक॥
अगर गुलाल कुमकुमा केसरि, सुमति लेहु भरि थार।
उन्मुनि द्वार गगन झरि लागी, बाजत अनहद तार॥१॥
जाके नाम छत्र सिर धारी, चन्दन चर्चि बिचार।
काया करम नाम निज केसरि, सरस न लागेउ बार॥२॥
पाँच सोहागिनि पायन परिलीं, निर्गुन नाम अधार।
घूँघुट खोलि लाज बिसरावो, कहैं दरिया होइ पार॥३॥

(१०)

सतसँग में खेलत होरी॥टेक॥
मन बृज इक तन बृन्दावन में, रँग को धूम मचोरी।
पाँच पचीस सखी सब ग्वालिनि, तेहि सँग रास रचोरी,
करैं परपंच न थोरी॥१॥
चंचल चपल चतुर बृज नायक, नट इव नाच करोरी।
निकट रहै फिर दूरि दिखावै, मैन मजीठ रँग घोरी,
करै घट भीतर चोरी॥२॥
त्रिकुटि जमुन तट केलि करैं वे, से घरि झकझोरी।
केता बरजौं बरजि नहिं मानै, बरबस बहियाँ मरोरी,
कहै सब से बरजोरी॥३॥
ज्ञान को राग रुबाब ध्यान धरि, सुरति निरसि इकठोरी।
भँवरगुफा के कुंज गलिन में, प्रेम धगा जनि तोरी,
सखी धन जीवन थोरी॥४॥

छिरकत अगर गुलाल कुमकुमा, नाम केसर रँग घोरी।
उनमुनि की पिचुकार बनी है, सतगुरु रंग चभोरी,
भली हैं सोहागिनि गोरी ॥ ५ ॥
बर चरचा सतसंगत में, मन मानस व्याह करोरी ।
दरिया साहेब अमर पति दूलह, गवने के दिन थोरो,
चलो किन देखन बौरी ॥ ६ ॥

॥ मलार ॥

(१)

हरि जन प्रेम जुगुति ललचाना ।
सतगुरु सब्द हिये जब दीसे, सेत धुजा फहराना ॥ १
हृदे कँवल अनुराग उठे जब, गरजि घुमरि घहराना ।
अमृत बुन्द बिमल तहँ झलके, रिमि झिमि सघन सोहान
बिगसित कँवल सहसदल तहवाँ, मन मधुकर लपटाना
बिलगि बिहरि फिर रहत एकरस, गगन मधे ठहराना ॥
उछरत सिन्धु असंख तरँग लहि, लहरि अनेक समान
लाल जवाहिर मोती ता में, किमि करि करत बखाना।
बिबरन बिलगि हंस गुन राजित, मानसरोवर जाना
मंजन मैलि भई तन निर्मल, बहुरि न मैल समाना ॥ !
एक से अनँत अनँत से एक है, एक में अनँत समान
कहैं दरिया दिल चसमाँ का२ले, रतन झरोखे जाना

(२)

जा के हिये गगन झरि लागी ।
बिना घटा घन बरिसन लागी, सुरति सुखमना जागी

अजपा जाप जपै निस बासर, रहै जगत से बागो* ।
मूल अकह में गम्मि बिचारै, सोई सदा जन भागी ॥२॥
अठदल कँवल झरोखा तहवाँ, नाम बिमल रस पागी ।
तिल भरि चौकी दना† दरवाजा, ताहि खोजु बैरागी ॥३॥
जोरे जारे सब्द बनावे, राग गावे सो रागो ।
अलख लखै कोइ पलक बिचारै, सोई संत अनुरागी ॥४॥
थकित भये मन गोत कबित्तन, भौ विषया के तयागी ।
सब्द सजोवन पारस परसेउ, सीतल भो तन आगी ॥ ५ ॥
इत उत कहे काम नहिं आवै, सारहिं लेवै माँगी ।
कहैं दरिया सतगुरु की महिमा, मेटे करम के दागो ॥६॥

(३)

अमर पति प्रीतम काहे न आवो ।
तुम सत बर्ग हो सदा सुहावन, किमि नहिं उर गहि लावों १
बरषा बिबिधि प्रकार पवन अति, गरजि घुमरि घहरावो।
बुन्द अखंडित मंडित महिपर, छटा चमकि चहुं जावो ॥२॥
झींगुर झनकि झनकि झनकारहिं, बान बिरह उर लावो ।
दादुर मोर सोर सघन बन, पिया बिनु कछु न सोहावो॥३॥
सरिता उमड़ि घुमड़ि जल छावो, लघु दिर्घ सब बढ़ियावो॥
थाके पंथ पथिक नहिं आवत, नैनन मैं झरि लावों ॥४॥
केहि पूछौं पछितावत दिल में, जो पर होइ उड़ि धावों ।
जो पिया मिलै तो मिलौं प्रेम भरि, अमि भाजन‡ भरि लावों ५
है बिस्वास आस दिल मेरे, फेरि दृग दर्सन पावों ।
कहैं दरिया धन भाग सोहागिनि, चरन कँवल लपटावौं६

---

* ख़िलाफ़ । † दाना के बराबर । ‡ बरतन ।

॥ विहागरा ॥

(१)

बिहंगम कौन दिसा उड़ि जैहौ ।
नाम बिहूना सो पर हीना, भरमि भरमि भौ रहि हौ ॥१॥
गुरु निन्दक बद* संत के द्रोही, निन्दै जनम गँवैहौ ।
पर दारा† परसंग परस्पर, कहहु कौन गुन लहिहौ ॥२॥
मद पी माति मदन तन ब्यापेउ, अमृत तजि बिष खैहौ ।
समुझहु नहिं वा दिन की बातैं, पल पल घात लगैहौ ॥३॥
चरन कँवल बिनु सो नर बूड़ेउ, उभि चुभि थाह न पैहौ ।
कहैं दरिया सत नाम भजन बिनु, रोइ रोइ जनम गँवैहौ ॥४॥

(२)

हंसा कोइ सतगुरु गमि पावे ।
तेजे मान पिवै ममता को, तब छप लोक सिधावे ॥ १ ॥
उजल हंसा निसु बासर दीसे, सीस पदुम झलकावे ।
राव रंक सब इक-सम जाने, सत्त प्रग ट गुन गावे ॥२॥
अति सुख सागर सरग नरक नहिं, दुर्मति दूरि बहावे ।
आड़ न अटक भटक नहिं कबहीं, घट फूटे मिलि जावे ॥३॥
बरन बिबेक भेद नहिं जाने, अबरन सबै मिलावे ।
जहँ देखे तहँ दरसित चन्दा, फनिमनि जोति बरावे ॥४॥
रमै जगत में ज्यौं जल पुरइनि, यहि बिधि लेप न लावे ।
जल के पार कँवल बिगसाना, मधुकर प्रान लुभावे ॥५॥
जा से मिलना अब मिलि रहिये, बिछुरत दूरि दिखावे ।
कहैं दरिया दरपन को मुरचा, सिकल किये बान आवे ॥६॥

* कहलाते हैं । † पर स्त्री ।

(३)

बुध जन चलहु अगम पथ भारी ।
तुम तें कहौं समुझ जो आवै, अग्रि के* धार सम्हारी ॥१॥
काँट कूस पाहन नहिं तहवाँ, नाहिं बिटप† बन झारी ।
बेद् कितेब पंडित नहिं तहवाँ, बिनु मसि अंक सँवारी ॥२॥
नहिं तहँ सरिता समुँद न गंगा, ज्ञान के गमि उँजियारी ।
नहिं तहँ गनपति फनपति ज्ञाना, नहिं तहं सृष्टि सँवारी ॥३॥
स्वर्ग पताल मृत लोक के बाहर, तहवाँ पुरुष भुवारी‡ ।
कहैं दरिया तहँ दर्सन सत है, संतन लेहु बिचारी ॥४॥

(४)

अवधू सब्दहिं करो बिचारा ।
सो पद गहो सरन रहो इस्थिर, पारब्रह्म तें न्यारा ॥ १ ॥
पारब्रह्म वारे यह लटका, अचुता§ में चुत लूटा ।
अबिनासी बिनसत हम देखा, अचल नहीं चलि फूटा ॥२॥
बिदुरी कहै बिघो तेहिं लूटा, और जहाँ लक पीया ।
नाथि नाथि के कैद किया है, इन्द्र महेसहिं खोया ॥३॥
बड़ बड़ गिद्ध पकड़ि के बाँधा, किमि करि पर फहरावो ।
चूँगत धारा जमीं पर रहेऊ, उड़े कहाँ तुम धावो ॥ ४ ॥
एक सरन सतगुरु के जानो, सो तुम किमि करि जावे ।
पलोपार यह रहट लगा है, इक बूड़े इक आवै ॥ ५ ॥
सतगुरु सब्द साधि जब आवै, वार पार तें भीना ।
कह दरिया कोइ संत बिबेकी, नील गयो परमोना ॥ ६ ॥

---

*अव की । † पेड़ । ‡ भुवार=राजा ; भवारी=स्थित । दूसरी लिपि मे "भवारी" है । § स्थिर ।

(५)

अवधू सो जोगी गुरु मेरा, जो येह पद का करै निबेरा ॥ टेक
सुरति निरति मैं प्रेम मगन भो, अगम अगाधि अपारा ।
अजरा जोति अमरपुर गाँऊ, समुझि न काहु बिचारा ॥१॥
बिगसित बारिज* बालौ निकसी, भवन दिपक उँजियारा ॥
अझर झरै अमी रस वाको, कंचन कलस सँवारा ॥२॥
मंडल सेत धुजा सिर सोभै, सहस कँवल दल फूला ।
सेत बरन भँवरा इक बैठल, असंख सुरज इक मूला ॥३॥
चाँद सुरज की गमि नहिँ तहवाँ, के। करि सके बखाना ।
सत साहेब दरिया दिल देखो, सुमिरहु पद निर्बाना ॥४॥

(६)

अवधू कहे सुने का होई ।
जो कोइ सब्द अनाहद बूझै, गुर ज्ञानी है सोई ॥१॥
थाके बाट चलत ना थाके, थाके मुनिवर लोई ।
प्यास वाला के मिलै न पानी, अनप्यासे जल बोहीं† ॥२॥
पहिले बीज फूल फल लागा, फुल देखि बीज नसाई ।
जहाँ बास तहँ भौंरा नाहीं, अनबासे लपटाई ॥३॥
जहाँ गगन तहँ तारा नाहीं, चन्द सूर का मेला ।
जहाँ सुरज तहँ पवन न पानी, येहि बिधि अविगति खेला ॥४॥
जब सरूप तब रूप न देखे, जहाँ छाँह तहँ धूपा ।
बिनु जल नदिया माँछ बियानी, इक बकता इक चूपा ॥५॥

* कमल । † बोर देना ।

(३)

बुध जन चलहु अगम पथ भारी ।
तुम तैं कहौं समुझ जो आवै, अछरि के* धार सम्हारी ॥१॥
काँट कूस पाहन नहिं तहवाँ, नाहिं बिटप† बन झारी ।
बेद कितेब पंडित नहिं तहवाँ, बिनु मसि अंक सँवारी ॥२
नहिं तहँ सरिता समुँद न गंगा, ज्ञान के गमि उँजियारी ।
नहिं तहँ गनपति फनपति ज्ञाना, नहिं तहं सृष्टि सँवारी॥३
स्वर्ग पताल मृत लोक के बाहर, तहवाँ पुरुष भुवारी‡ ।
कहैं दरिया तहँ दर्सन सत है, संतन लेहु बिचारी ॥४॥

(४)

अवधू सब्दहिं करो बिचारा ।
सो पद गहो सरन रहो इस्थिर, पारब्रह्म तें नयारा ॥ १ ॥
पारब्रह्म वारे यह लटका, अचुता§ में चुत लूटा ।
अबिनासी बिनसत हम देखा, अचल नहीं चलि फूटा ॥२॥
बिद्री कहे बिघो तेहिं लूटा, और जहाँ तक पीया ।
नाथि नाथि के कैद किया है, इन्द्र महेसहिं खोया ॥३॥
बड़ बड़ गिद्ध पकड़ि के बाँधा, किमि करि पर फहरावो ।
चूँगत चारा जमीं पर रहेऊ, उड़े कहाँ तुम धावो ॥ ४ ॥
एक सरन सतगुरु के जानो, सो तुम किमि करि जावै ।
वहीपार यह रहट लगा है, इक बूड़े इक आवै ॥ ५ ॥
सतगुरु सब्द साधि जब आवै, वार पार तैं भीना ।
कह दरिया कोइ संत बिबेकी, नीछ गयो परमोना ॥ ६ ॥

---

* अव की । † पेड़ । ‡ भुवार=राजा ; भवारी=स्थित । दूसरी लिपि मे "भवारी" है । § स्थिर ।

इन में नाहीं करम कमाते, भरम करम घट छावै ।
जा के रूप न जा के रेखा, ता के गुन सब गावै ॥ ९ ॥
यह सब भेष अलेख मता है, बहु परिपंच सुनावै ।
जैसे दरपन दरस न देखे, प्रतिमा दृष्टि लगावै ॥१०॥
सतगुरु से सत सब्द सनेही, निगम नेति ना गावै ।
कहैं दरिया दर सब तें न्यारा, जो कोइ भेद बतावै ॥११॥

(८)

साधो सतगुरु कहँ उपकारा ।
जामें आड़ अटक ना कबहीं, उग्र ज्ञान है सारा ॥१॥
सिकली बिना साफ ना होवे, चकमक चिस गहि झारा ।
जगमग जोति बरै जहँ निर्मल, पुरुष इनहिं तें न्यारा ॥२॥
कागा कछिया हंस होत हैं, तेजे बुद्धि बिकारा ।
बिना हुकुम पग कतहुँ न धारै, उतरै भवजल पारा ॥ ३ ॥
जा की छबि येहि छाइ जगत में, देखो सुरज अकारा ।
निगुन सगुन तें न्यारा कहिये, खासा खसम तुम्हारा ॥४॥
केते ज्ञानी ज्ञान कथत हैं, जोगिन्ह जुगुति सम्हारा ।
हाड़ चाम रुधिर की मोटरी, ता में है करतारा ॥५॥
करै बिबेक बिचार जो आवै, मनका सकल पसारा ।
कहैं दरिया दर खोजहु प्रानी, कहि दिन्ह बारम्बारा ॥६॥

वृच्छ एक तैंतिस तन लागा, अमृत फल विनु पीया।
कहैं दरिया कोइ संत विवेकी, मूवत उठि कै जीया ॥६॥

(७)

साधो सतगुरु काको कहिये।
बूझि विचारि चढ़ो नर प्रानी, भौसागर नहिँ बहिये ॥१॥
की कोइ ज्ञानी ज्ञाता कहिये, की हरि पद अनुरागी।
वेद पढ़ा कोइ भेद में राता, की माया के त्यागी ॥ २ ॥
की कोइ जोगी जुगुति से जागे, भोग भसम करि दावे।
की नित नेउरो* नेम करे, की प्रोलि पवन में लावे ॥ ३ ॥
की धूम्र† पान पावता नीके, मौनी मगन अकासा।
दया धर्म करि तिरथ बरत में, त्यागे भूख पियासा ॥४॥
लावे भभूत जटा सिर राखे, काम क्रोध बिसरावे।
जंगम जोगी सेवड़ा कहिये, की बहु घंट बजावे ॥ ५ ॥
गृहे‡ तेजि सवै बनखंडे, कंदमुल करै अहारा।
दंड कमंडल फिरै उदासी, करमे बहु बिस्तारा ॥६॥
की ब्रह्मचारी ब्रह्म बिचारै, की बहु करै अचारा।
की ब्रह्म ज्ञान है मथुना मथन करै, खाद अखाद सँवारा ॥७॥
की निरगुन सरगुन सबर्ग मत§, की कोई बैरागी।
ताल मृदंग सबद बहु गावै, की रसना रस पागी ॥ ८ ॥

---

* योग की एक क्रिया का नाम। † धुआँ। ‡ घर। § सब मतोँ को एक कर मानने वाला।

इन में नाहीं करम कमाते, भरम करम घट छावै ।
जा के रूप न जा के रेखा, ता के गुन सब गावै ॥ ९ ॥
यह सब भेष अलेख मता है, बहु परिपंच सुनावै ।
जैसे दरपन दरस न देखे, प्रतिमा दृष्टि लगावै ॥१०॥
सतगुरु सो सत सब्द सनेही, निगम नेति ना गावै ।
कहैं दरिया दर सब तें न्यारा, जो कोइ भेद बतावै ॥११॥

(८)

साधो सतगुरु कहँ उपकारा ।
जामें आड़ अटक ना कबहीं, उग्र ज्ञान है सारा ॥१॥
सिकली बिना साफ ना होवे, चकमक घिस गहि झारा ।
जगमग जोति बरै जहँ निर्मल, पुरुष इनहिँ तेँ न्यारा ॥२॥
कागा कछिया हंस होत हैं, तेजे बुद्धि बिकारा ।
बिना हुकुम पग कतहुं न धारै, उतरै भवजल पारा ॥ ३ ॥
जा की छबि येहि छाइ जगत में, देखो सुरज अकारा ।
निगुन सगुन तें न्यारा कहिये, खासा खसम तुम्हारा ॥४॥
केते ज्ञानी ज्ञान कथत हैं, जोगिन्ह जुगुति सम्हारा ।
हाड़ चाम रुधिर की मोटरी, ता में है करतारा ॥५॥
करै बिबेक बिचार जो आवै, मनका सकल पसारा ।
कहैं दरिया दर खोजहु प्रानी, कहि दिन्ह बारम्बारा ॥६॥

॥ झूलना ॥

(१)

मुक्ति के हींडोलना, झूलहिँ विवेक बिचार ॥ टेक ॥
सत सुकृत दोउ खंभ गाड़े, सुरति डोरि लगाय ।
प्रेम पटरी बैठि के, यह झुलहिँ संत समाय ॥ १ ॥
इँगला पिँगला सुखमना, जहँ चलै पवन सुधारि ।
अर्ध उर्ध आवै दुवादस, धरन चित्त सम्हारि ॥२॥
जहँ जलद* झलकित पुहुप खिलसित, भँवर बास समाय ।
तहँ मोह माया निकट नाहीं, अग्र घ्रान रहु छाय ॥३॥
फूहि झमझम झरत निरगुन, रहो गगन समाय ।
तहँ मनी मुक्ता निरखु निर्मल, प्रेम पंथ अपार ॥४॥
तहँ रह अकह कह अकथ कथ है, कहे को पतियाय ।
तहँ झूलहीं जन प्रेम बसि होय, अवा गमन नसाय ॥५॥
छोड़िहैं सब भर्म कर्महिं, नाम निस्चै पाय ।
अचल पद कहँ लागिहैं सब, सकल भर्म मिटाय ॥६॥
सुमिरत बेद पुरान पंडित, पुजा करम बखानि ।
भर्म कर्म लै झुलन लागे, अंत बिगुरचन हानि ॥७॥
आदि अंत औ मध्य मंडल, झुलहिँ मुनी महेस ।
कहैँ दरिया सत्त महिमा, ज्ञान गुरु उपदेस ॥८॥

(२)

सत्त सुकृत दुनौँ खंभा हो, सुखमनि लागलि डोरि ।
अरध उरध दुनौँ मचवा† हो, इँगला पिँगला झकझोरि ॥ १॥

---

* बादल । † मचिया या खटोला जिस पर बैठ कर हिँडोला झूलते हैँ ।

कौन सखी सुख बिलसै हो, कौन सखी दुख साथ ।
कौन सखिया सोहागिनि हो, कौन कमल गहि हाथ ॥२॥
सत्त सनेह सुख बिलसैं हो, कपट करम दुख साथ ।
पिया-मुख सखिया सोहागिनि हो, राधे कमल गहि हाथ ॥३॥
कौन झुलावै कौन झूलहिँ हो, कौन बैठलि बाट ।
कौन पुरुष नहिँ झूलहिँ हो, कौन रोकै बाट ॥४॥
मन रे झुलावै जिव झूलहिँ हो, सक्ति बैठलि खाट ।
सत्त पुरुष नहिँ झूलहिँ हो, कुमति रोकै बाट ॥५॥
सुर नर मुनि सब झूलहिँ हो, झूलहिँ तीनि देव ।
गनपति फनपति झूलहिँ हो, जोगि जती सुकदेव ॥६॥
जिया जंतु सब झूलहिँ हो, झूलहिँ आदि गनेस ।
कल्प कोटि लै झूलहिँ हो, कोइ कहै न सँदेस ॥७॥
सत्त सब्द जिन पावल हो, भयो निर्मल दास ।
कहैं दरिया दर देखिये हो, जाय पुरुष के पास ।८।

॥ फुटकर शब्द ॥

(१)

संतो ऐसा ज्ञान सुधारा ।
प्रीतम प्रेम सुधा रस बानी, कहिये कथा पसारा ॥१॥
ज्यों मकरी मुँह तार लगावे, सुरति बाँधि महि चौरा* ।
आवत जात देखा पल माहीं, कनक पत्र पर हीरा ॥२॥

---

* ऊँचे पर ।

है तो सेत फटिक निर्वाना, उनमुनि दीसे तारा।
सेत घटा घन मोती झलके, बिनु दिपक उँजियारा ॥३॥
अहै अकह कहिबे को नाहीं, यह कहि कथा पसारा।
कहैं दरिया गुरु ज्ञान पलीता, चकमक चित गहि झारा ॥४॥

(२)

संतो गत में अनहद बाजे।
झंझकार औ झनक झनक है, येहि मन्दिर में छाजे ॥१॥
जल के मंजन पवन जो कहिये, पवन के मंजन करता।
मन के मंजन ज्ञान जो कहिये, सो मन जग में बरता ॥२॥
ज्ञान होइ तो मन को चिन्है, ज्ञान बिना मन करता।
साढ़े तीन* मे बुद्धि भुलानी, वो अविगत नहिं मरता ॥३॥
काया नरम नरक की खानी, सो घट थापे जोगी।
जोग करे फिर भोग में आवे, राज भया फिर रोगी ॥४॥
झरि झरि परे जमीं नहिं आवे, चहुं दिसि अम्बर लागा।
अविगत बुंद अखंडित बरसे, पंडित वेदहिं त्यागा ॥५॥
जिव के गुरू जीव जो कीन्हा, जीव बिना नहिं मुक्ता।
कहैं दरिया तब अटल राज भौ, बहुरि न भव में भुक्ता ॥६॥

(३)

साधो निस दिन नौबति बाजै।
गगन मँडल जहँ तखत अनूठा, आम खास में छाजै ॥१॥
बादसाह वे अछे दुलह हैं, दुलहिनि के मन भावैं।
वा बर छोड़ि दुजा नहिं बरिहौं, मेरी महल जो आवै ॥२
बेली चमेली सेहरा सिर पर, अग्र छत्र छबि छाजे।
जगमग जगमग मोती झलके, मनि मानिक तहँ गाजे ॥३॥

* शरीर जो साढ़े तीन हाथ का होता है।

ब्रह्मा बिस्नु महेसर दर पर, नारद बेनु बजावै ।
पीर औलिया केते गिनिये, बेद किताब सुनावै ॥४॥
कोटि देवि जाके चेरी चातृक*, सोहं चँवर डोलावै ।
मन सफदार खड़े कर जोरे, दरस दादनो पावै ॥५॥
सदा अमर मरै नहिं कबहीं, जीवन जिन्द कहावै ।
कहैं दरिया वे वाहा† सोई, सिफत कौन गुन गावै ॥६॥

(४)

साधो सुनि लीजै साहु सोइ होता,
जो पूरा तौलि रहै मन मासा ॥ टेक ॥
उनमुनी की डंडी कीजे,
तिरबेनी की सानी ।
इक मन पँच सेर तौलन लागे,
ज्ञान को रासि लदानी ॥ १ ॥
गगन मँडल बिच रचो चौसरा,
भँवरगुफा के घाटे ।
अजपा जाप जहाँ है दूलह‡,
बिकरी लाय वोहि हाटे ॥ २ ॥
आँखि मूँदि आँधर जिनि होवो,
चोर माल लै जाई ।
चकमक झारि दिपक तहँ बारो,
चेतन रहो घर माहीं ॥ ३ ॥

---

* मुँह जोहने वाले। यहाँ "चाकर" शब्द ठीक बैठता है पर लिपि मे "चातृक" है। † दरिया साहेब का मूल मंत्र। ‡ यहाँ "दौलत" का शब्द ज़ियादा अच्छा होता है।

सौदा सुलफ करो बहु भाँति,
जा तें साहु न डंडे ।
कहैं दरिया सुन बोपारी बनिया
कबहुँ न करो पखंडे ।

(५)

कोइ संत बिबेकी सब्द बिचारा, प्रेम पिवे सो प्यारा ॥
अर्ध उर्ध के मद्धे मानिक, करै दृष्टि उँजियारा ।
बंक नाल नाभी के कहिये, भँवर गुफा के राह सुढारा ॥१॥
खेचरि भूचरि सजे अगोचरि, उनमुनि मुद्रा धारा ।
सरिता तीनि मिले इक संगम, सूभर भरि भरि सारा ॥२॥
अनहद ताल पखाउज किन्नर*, सोभा सुमति बिचारा ।
झिनझिन जंतर निस दिन बाजे, जम जालिम पचिहारा ॥३॥
सोवत जागत ऊठत बैठत, टुक बिहीन नहिं तारा ।
कहैं दरिया कोइ संत बिबेकी, निरभै लोक सिधारा ॥४॥

(६)

जन कोइ आनँद मंगल गावै ॥ टेक ॥
थिरकत† फिरै भवन के भीतर, पदुम पदारथ पावै ।
मैन मजीठ‡ मैल सब छूटा, घटा चमक घन छावै ॥१॥
रोमरोम जाके पद परगासित, बिहरि बिहँसि मिलि जावै ।
भूमि वीरानी भर्म न राखै, पग नाहीं अरुझावै§ ॥२॥
बीज बोवे नहिं पेड़ पुरातम, फल फुल सबहिं मिटावे ।
तुरिया तत्त उड़ा बिनु ताजन‖, इहि बिधि सर्क बतावै॥३॥

---

* इन्द्र की सभा के गवैये । † नाचता । ‡ गहिरा लाल रंग जो कभी छूटता नहीं । § यह संसार ऊसर ज़मीन के समान है इस में भर्म बसे कोई पाँव न अटकावै । ‖ कोड़ा ।

मिला डगर चढ़ा बिनु डोरी, डगमग कबहुँ न आवै।
पियतहिं मुक्त भया मुक्ताहल, मनि दृग अंजन लावै ॥४॥
पिया प्रेम हुआ मस्त दिवाना, गूँगा सैन बतावै।
कहैं दरिया धन धन वे सतगुरु, बहुरि न भौजल आवै ॥५॥

(७)

संतो एहू अमर घर जैये।
तन मन वारि चढ़ो सर जा से, सोइ फल अमृत पैये ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ तिरिस्ना, यह सब मेलि लड़ैये।
नारी पुरुष स्वाद बिसरावो, सतगुरु सब्द समैये ॥२॥
बंक नाल उलटि अजपा के, गगन गुफा घर छैये।
अर्ध उर्ध औ सोहं सुरति, दिब्य दृष्टि गहि लैये ॥३॥
सेत घटा घन मोती झरि हैं, निरमल जोति समैये।
पूरन ब्रह्म पुनीत उदित भौ, बहुरि न भवजल ऐये ॥४॥
तहँ सुखराज बिलास पुहुप पर, अमृत चाखन पैये।
कहैं दरिया दाया सतगुरु के, पास पुरुष के रहिये ॥५॥

(८)

तुम मेरो साईं मैं तोर दास, चरन कँवल चित मेरो पास ॥१॥
पल पल सुमिरौं नाम सुबास, जीवन जग में देखो दास ॥२॥
जल में कुमुदिनि चन्द अकास, छाइ रहा छबि पुहुप बिलास३
उनमुनि गगन भया परगास, कहैं दरिया मेटा जम त्रास॥४

(९)

तुम सब ऐगुन मेटनिहारा।
जा के हाथ जगत की डोरी, गुन गहि घैंचो पारा ॥१॥
पूत कपूत पिता कहँ लज्जा, जो मैं भूलि बिगारा।
जैसे मनि मन्दिर के भीतर, निसि बासर उजियारा ॥२॥

तुम जिन्दा हो जागृत जग में, वेयहा* वेकिमती।
खाक से पाक किये छन माहीं, यही हमारी विनती ॥३॥
सहज जोग अमृत रस चाखै, परै कयहिँ नहिँ सूखा।
अनवा चीज दिजे भरिपूरी, आतम रहे न भूखा ॥ ४।
नखसिख ले तुम सुँदर वनाया, और भुजा वल नीका।
अदल तुम्हारा ज्ञान हमारा, दूजा कहै सो फोका ॥५॥
वचन तुम्हारा अजर अमर है, हाल हजूरे सूना।
कहैं दरिया दाया के सागर, गनिये पाप न पूना ॥६॥

(१०)

तुम साहेव पारस के मूला।
जा के पारस जोग दिढ़ाना, सोई जीवन फूला ॥ १ ॥
पारस विनु कंचन नहिँ होवै, ताँवा के गुन नासा।
सो पारस भृंगी रचि लिन्हा, देखा अजव तमासा ॥ २।
स्रवन ज्ञान अभि अंतर पारस, सार सब्द की रीती।
तुम अजीत जग जिते न कोई, वै मेरे परतीती ॥ ३ ॥
उग्र ज्ञान हिरदा चित चेतनि, कुदरत नाहिँ छपाया।
ममता मारि साधु यह जीवै, जिन तेरा गुन गाया ॥४॥
साबुन मिलै मैलि सब काटै, काया कापड़ धोवै।
गया धोवन निर्मल हूआ, अघ पातक सब खोवै ॥५॥
हौँ गरीब तुम गरिब-नेवाज हौ, बाँह पकरि के लीजै।
कहैँ दरिया दर्सन को फल है, सब बिधि अच्छा कीजै ॥६

(११)

साधो ऐसा ज्ञान प्रकासी।
आतम राम जहाँ तक कहिये, सबै पुरुष की दासी ॥१॥

---

* अनमोल—और वेबाहा मूलमन्त्र दरिया पंथियों का है। † अनेक प्रकार के।

यह सब जोति पुरुष है निर्मल, नहिँ तहँ काल निवासी।
हंस बंस जो है निरदागा, जाय मिलै अबिनासी ॥२॥
सदा अमर है मरै न कबहीं, नहिं वहँ सक्ति उपासी।
आवै जाय खपै सो दूजा, सो तन कालै नासी ॥३॥
तेजे स्वर्ग नर्क कै आसा, या तन बेबिस्वासी।
है छप लोक समनि तेँ न्यारा, नहिँ तहँ भूख पियासी ॥४॥
केता कहै कबि कहे न जानै, वाके रूप न रासी।
वह गुन-रहित तो यह गुन कैसे, ढूँढ़त फिरै उदासी ॥५॥
साँचे कहा झूठ जिनि जानहु, साँच कहे दुरि जासी।
कहैँ दरिया दिल दगा दूरि करु, काटि दिहैँ जम फाँसी ॥६॥

(१२)

साधो निरगुन गुन तेँ न्यारा।
अछय बिरिछ वो लगे फूल फल, पत्र भया संसारा ॥१॥
जोति सरूपी कन्या कहिये, तीनि देव दरबारा।
मते मराये अपने पहरा*, खाकुं† का फंद पसारा ॥२॥
बेद कितेब दोइ फंद रचिया, पंछी जिव संसारा।
ललचि के लागे चट दे बाझे, पट दे ब्याधे‡ मारा ॥३॥
धोखा देखि सकल जग दौड़े, ऐसा पंथ बिचारा।
जिव भो मीन धिमर के फंदा, बड़ भै बात बिगारा ॥४॥
ऐसा गुरू ठगौरी जग मेँ, ठग ठाकुर ब्योहारा।
घर के खसम बधिक‡ होइ लाग्यो, सब कहु कौन बिचारा ॥५॥
आवत जात परे भौचक मेँ, जाल मेँ सिफति§ पसारा।
कह दरिया सुनु संत सजन जन, सब्दहिँ करु निरुवारा ॥६॥

---

* समय पड़े मति मारी गई। † चारा। ‡ चिड़ीमार। § गुण।

(४३)

जहँ लख दृष्टि लखन में आवै, सो माया का चीन्हा ।
का निरगुन का सरगुन कहिये, वै तो दोउ तें भीना ॥१॥
दीपक जरै प्रकास जहाँ तक, बाती तेल मिलाया ।
जा की जोति जगत में जाहिर, भेद सो बिरले पाया ॥२॥
परख पखान पारस जो कहिये, सोना जुगुति बनाई ।
जेहि पारस से पारस भयउ, सो संतन ने गाई ॥३॥
परिमल बास परासहिँ बेधे, कह वो चन्दन हूआ ।
जेहिँ पारस से परिमल भयऊ, सो कबहीं नहिँ मूआ ॥४॥
जो पारस भृंगी यह जाने, कीट से भृंग बनाई ।
वा का भेद लखै नहिँ कोई, अपने जाति मिलाई ॥५॥
सनद परी सतगुरु के पासे, भरमि रहा सब कोई ।
बिरला उलटि आप को चीन्हा, हंस बिमल मल धोई ॥६॥
जल थल जीव जहाँ लग ब्यापक, बेद कितेबे भाखा ।
वा की सनद कबहुं नहिँ आई, गुप्त अमाने राखा ॥७॥
सतगुरु ज्ञान सदा सिर ऊपर, जो यह भेद बतावै ।
कहैँ दरिया यह कथनी मथनी, बहु प्रकार से गावै ॥८॥

(४१)

यह जग पारख बिना भुलाना ।
अगुनसगुनजग दुइ करि थापहिँ, अजपाघरिघरि ध्याना ॥१
अद्वैत ब्रह्म सकल घट ब्यापक, निरगुन में लपटाना ।
आवै जाय उपजि फिर बिनसै, जरि मरि कहाँ समाना ॥२॥
छवो चक्र औ चारि चतुरदल, बेद मते अरुझाना ।
बंक नाल को डोरी खींचे, जोगी जुगुति बखाना ॥३॥

सहस पाँखरी कमल बिराजित, मन मधुकर लपटाना ।
जल के सुखे कँवल कुम्हिलाने, तब कहु कहाँ ठिकाना ॥४॥
घट मैं करता लोक कहतु है, पाँच तत्तु बिलगाना ।
सगुन बिनसि निरगुन रहित है, गुन बिन कहाँ समाना॥५॥
करहु बिचार सकल मिलि ऐसे, भेष बिबिधि है बाना ।
कहैं दरिया सतगुरु गमि जानै, पहुँचै हंस ठिकाना ॥६॥

(१५)

भीतर मैलि चहल* कै लागी, ऊपर तन का धोवे है ॥१॥
अविगति मुरति महल के भीतर, वाका पंथ न जोवे है ॥२॥
जुगुति बिना कोइ भेद न पावै, साधु सँगति का गोवे है ॥३॥
कहैं दरिया कुटने वे गोदी, सीस पटकि का रोवे है ॥४॥

गोष्ठी

दरिया साहेब वो रामेश्वर जोगी की काशी में

(रामेश्वरदास)

गुफा सुफा में आसन माँड़े, सुन में ध्यान लगावै ।
आसम साधि पवन जो पावै, जोनि संकट नहिँ आवै ॥
यह मन जाना ब्रह्म दिढ़ाना, सोई सिद्ध कहावै ।
कर्म जोग बिनु जुगति न पावै, सतगुरु सब्द लखावै ॥
बायु बिन्द लै गगन समाना, त्रकुटी है अस्थाना ।
सास्तर गीता यह मति भाखे, सोई सब्द प्रमाना ॥
रोम रोम सींचे जो जोगी, अमृत झरि जो आवै ।
कहैं रामेश्वर सुनु हो स्वामी, तब वा पद के पावै ॥१॥

---

* कीचड़ ।

(दरिया साहेब)

का गोफा सोफा में बैठे, का इक सारी लाये ।
का आसन्न बासन के बाँधे, का भौ पवन चढ़ाये ॥
का आतम के जारे मारे, का भौ तृषा मिटाये ।
जब्ब लग जुगुति जानि नहिं आवे, का भा जोग कमाये ॥
का सींगी सेल्ही के डारे, का मुख टेरि सुनाये ।
का नाचे झालरि झनकारे, का मिरदंग बजाये ॥
झिलिमिलि झगरा झूठा झलते, औंधा ध्यान लगाये ।
कहिं दरिया सुनु ज्ञान रमेसर, जग में जिव जहँडाये ॥२॥

(रामेश्वरदास)

सनकादिक सुकदेव जो कहिये, जा के ब्रह्म दिढ़ाना ।
अखंडित ब्रह्म अगोचर अविगति, यही मता ठहराना ॥
बसिष्ट ज्ञान जो स्रेष्ट जगत में, औ मुनि बहुत बखाना ।
जा को बचन अमर है जुग जुग, निरालेप निरबाना ॥
एकै जोति सकल घट ब्यापेउ, अद्वैत ब्रह्म कहावै ।
अगम अपार पार नहिं पावै, निगम नेति जो गावै ॥
चार बेद ब्रह्मा मुख भाखा, ब्यास गरंथ बनाया ।
कहिं रामेस्वर सुनिये स्वामी, यह छोड़ि दुजा न आया ॥३॥

(दरिया साहेब)

हरि ब्रह्मा औरो त्रिपुरारी, बहुते जोग कमाते ।
नवो नाथ चौरासी सिद्धा, गोरख पवनै खाते ॥
इँगला पिंगला सुखमनि जानै, मेरु दंड को साधा ।
बंक नाल की डोरी खींचै, उलटि दुवादस बाँधा ।
मारकँडे वो संकर जोगी, जग में परघट ज्ञाना ।
मुनि बसिस्ट राम के जो गुरु, उन भी ज्ञान बखाना

बेद गरब तें पंडित भूला, आपन मरम न जाना।
ये जीवे जहँड़ाये जग में, पढ़ि पढ़ि बेद पुराना॥
जोति सरूपी जा के कहिये, करै जिवन के घाता।
दान पुन्य बलि राजा कीन्हा, बाँधि पताले जाता॥
उतपति परलै यह जग करई, सो मन चाहै हाथा।
मिरतक* अंध नजरि नहिं आवैं, रहै सबनि के माथा॥
जब लगि मन परिचै नहिं पावै, किमि उतरै भवपारा।
कहैं दरिया सुन ज्ञान रमेसर, करिले सब्द बिचारा॥४॥

(रामेश्वरदास)

खेचरि भूचरि चाचरि अगोचरि, यह जोगी जो पावै।
इँगला पिंगला सुखमनि घाटै, अठदल कमल दिढ़ावै॥
पाँच तत्त की बासो लेसै, परम जोति परगासा।
सुन्न मँदिर में मुद्रा जागै, करम भरम सब नासा॥
नाद बिन्द जाके घट जरई, सहज समाधि लगावै।
आपुहिं गुरू आप है चेला, कहु का को गुन गावै॥
आपन अंस पावे जो जोगी, कवन बुहै को तरई।
कहैं रामेस्वर सुनो सुवामी, यह पद निस्चै धरई॥५॥

(दरिया साहेब)

खेचरि भूचरि चाचरि अगोचरि, मुद्रा झिलमिल† त्यागे।
छोड़ि पपीलक गहै बिहंगम, उन मुनि मुद्रा जागै॥
छवो चक्र काया परघट है, वा का भेद जो पावै।
सब्द सजीवनि हैगा मूला, काया में झलकावै॥

---

* मौत। † प्रकाश।

चारै द्रिष्टि करै उँजियारा, सुन्न गगन मैं पेखै।
जा के सतगुरु पूरा मिलिया, सोई सब्द यह देखै॥
बाहर भीतर एकै लेखा, हनै सब्द नीसाना।
कस्तूरी नाभी मैं बासा, मिरगा मरम न जाना॥
जहवाँ जहाँ तहाँ सब देखो, घरै फुरै औ प्राना।
कहैं दरिया सुनु ज्ञान रमेसर, सुनि ले सब्द निसाना॥६॥

(रमेश्वर दास)

राम कृष्न आदि वो कहिये, जल थल जीव बनाया।
जोगी जती तपी सन्यासी, मुनि सब ध्यान लगाया॥
सनकादिक ब्रह्मादिक कहिये, अचल पदै के लागे।
जुग अनंत की येही महिमा, सिव समाधि मैं जागे।
नवो नाथ चौरासी सिद्धा, सब मिलि गुन जो गाया।
निरालेप निरंजन कहिये, अभुतानन्द कहाया॥
यह मत जाना ब्रह्म दिढ़ाना, पूरा सिद्ध कहावै।
कह रामेस्वर सुनिये स्वामी, बहुरि न भवजल आवै॥७॥

(दरिया साहेब)

सत्त पुरुष जब आपे होते, राम कृष्न नहिं रहिया।
एक से आदि अंत होइ आये, सृष्टि रचाहै जहिया॥
सनकादिक ब्रह्मादिक कहिये, उन भी अंत न पाया।
जोगी जती तपी सन्यासी, रोइ रोइ जनम गँवाया॥
सिव समाधि जो जुग जुग कहिये, आदि मरम नहिं जाना।
वह करता यह किरतिम कहिये, मया मोह भगवाना॥
बाद किये से मिलै न साहेब, बाद करै सो झूठा।
जब लगि सत्त सब्द नहिं पावैं, काल करम नहिं छूटा॥

जंगम जोगी पंडित ज्ञाता, निरंकार ठहराई ।
कहैं दरिया सुनु ज्ञान रमेसर, काल दाग धरि आई ॥८॥

साखियाँ

बेवाहा* के मिलन सौं, नैन भया खुसहाल ।
दिल मन मस्त मतवल हुआ, गूँगा गहिर रसाल† ॥

सत्त गुरू गमि ज्ञान करु, बिमल सदा परकास ।
मम सतगुरु का दास हौं, पद पंकज की आस ॥

सुक्कृत पिरेमहिँ हितु करहु, सत बोहित‡ पतवार ।
खेवट सतगुरु ज्ञान है, उतरि जाय भौ पार ॥

मथुरा मन के मंथिये, मथन करो गुरु ज्ञान ।
कंज पुंज झलकत रहै, देखत अघर अमान ॥

भजन भरोसा एक बल, एक आस बिस्वास ।
प्रीति प्रतीति इक नाम पर, सोइ संत बिबेकी दास ॥

है खुसबोई पास मैं, जानि परे नहिँ सोय ।
भरम लगे भटकत फिरे, तिरथ बरत सब कोय ॥

नीसाचर निसि चरतु हैं, निसा काल का रूप ।
दिन दीवाकर देखु छबि, हंस सो बिमल अनूप ॥

जंगम जोगी सेवड़ा, पड़े काल के हाथ ।
कहैं दरिया सोइ बाचिहै, सत्त नाम के साथ ॥

बारिधि अगम अथाह जल, बोहित बिनु किमि पार ।
कनहरिया गुरु ना मिला, बूड़त हैं मँझधार ॥

---

* दरिया पंथियों के मूल मंत्र और इष्ट का नाम । † बोलाक, बोलनेवाला ।
‡ नाव।

निकट जाय जमराज नहिं, सिर धुनि जम पछिताय।
बुन्द सिन्धु मेँ मिलि रहा, कवन सके बिलगाय॥
सिंघ निकट नहिँ आवई, करि सियार सेँ प्रीति।
साधु सिंघ मति सरस है, लियो मतंगहिँ* जीति॥
है मगु साफ बराबरे, मंदा लोचन माहिँ।
कवन दोष मगु भान कहँ, आपे सूझत नाहिँ॥
पहिले गुड़ सक्कर हुआ, चीनी मिसरी कीन्हि।
मिसरी से कन्दा भयो, यही सोहागिनि चीन्हि॥
पाँच तत्त की कोठरी, ता मेँ जाल जँजाल।
जोव तहाँ बासा करै, निपट नगीचे काल॥
दरिया तन से नहिँ जुदा, सब किछु तन के माहिँ।
जोग जुगत सेँ पाइये, बिना जुगति किछु नाहिँ॥
काम क्रोध मद लोभ जत, गरब गरूरी झारि।
बिमल प्रेम मनि धारि के, राखु दृष्टि उजियारि॥
दरिया दिल दरियाव है, अगम अपार बेअंत।
सब महँ तुम तुम मेँ सभे, जानि मरम कोइ संत॥

बेलवेडियर प्रेस, कटरा, प्रयाग की पुस्तकें

संतबानी पुस्तकमाला

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब का बीजक	...	...	॥।)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	...	...	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	...	...	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	...	...	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	...	...	।=)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	...	...	≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़्ते और झूलने	...	...	।=)
कबीर साहिब की अखरावती	...	...	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	...	...	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १		...	१=)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित		...	१=)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	...	...	१।-)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	...	...	१॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	..	...	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग	...	...	१॥)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	...	...	१॥)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	...	...	१।)
सुन्दर बिलास	...	...	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	...	...	॥।)
पलटू साहिब भाग २—रेख़्ते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया		...	॥।)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	...	...	॥।)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग	..	...	॥।-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	...	...	॥।-)
दूलन दास जी की बानी,	...	...	।)॥

चरनदास जी की बानी, पहला भाग ... ... ॥ᐅ)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग ... ... ॥)
गरीबदास जी की बानी ... ... १।-)
रैदास जी की बानी ... ... ॥)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर ... ... ।ᐅ)॥
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी ... ... ।-)
दरिया साहिब (माड़वाड़ वाले) की बानी ... ... ।ᐅ)
भीखा साहिब की शब्दावली ... ... ॥=)॥
गुलाल साहिब की बानी ... ... ॥।=)
बाबा मलूकदास जी की बानी ... ... ।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी ... ... -)
यारी साहिब की रत्नावली ... ... =)
बुल्ला साहिब का शब्दसार ... ... ।)
केशवदास जी की अमींघूँट ... ... -)॥
धरनी दास जी की बानी ... ... ।=)
मीराबाई की शब्दावली ... ... ॥=)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश ... ।ᐅ)॥
दया बाई की बानी ... ... ।)
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी] [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित] ... ... १॥)
संतबानी संग्रह, भाग २ [शब्द] [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं] ... ... १॥)

कुल ३४-)

अहिल्या बाई ... ... =

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

मूल्य केवल ६॥) । इसी असली रामायण का एक सस्ता संस्करण ११ बहुरंगा और ८ रंगीन यानी कुल २० सुन्दर चित्र सहित और सजिल्द १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥) । प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं और इनके काग़ज़ उमदा हैं।

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ।||=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। यह मानस-कोश का भी काम देगा। मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने के योग्य, मोटे अक्षरों में शुद्ध छपी है। मूल्य -)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के अन्य ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं। सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। मूल्य ।>)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूसी उपन्यास है। मूल्य १)

संदेह—यह एक मौलिक क्रांतकारी उपन्यास नया है। बिना जिल्द ।||) सजिल्द १)

चित्रमाला भाग १—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का सग्रह तथा परिचय है। मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग २—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है। मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग ३—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है मूल्य १)

चित्रमाला भाग ४—१२ रंगीन सुंदर चित्र तथा चित्र-परिचय है मूल्य १)

गुटका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है। पृष्ठ संख्या लगभग ४५० के है। इसमें अति सुन्दर ८ बहुरंगे और ५ रंगीन चित्र हैं। तेरहो चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनमोहक हैं। रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभदायक है। जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत तथा सुनहरी है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥)

घोंघा गुरू की कथा—इस देश में घोंघा गुरू की हास्यपूर्ण कहानियाँ बड़ी ही प्रचलित हैं। उन्हीं का यह संग्रह है। शिक्षा लीजिए और ख़ूब हँसिए। ।)

गल्प पुष्पाञ्जलि—इसमें बड़ी उमदा उमदा गल्पों का संग्रह है। पुस्तक सचित्र और दिलचस्प है। दाम ॥-)

हिन्दी साहित्य सुमन— दाम ॥)